अंकोर राज्य

जयवर्मन द्वितीय तथा उसके पुत्र जयवर्मन तृतीय ने कम्बुज राज्य को एक राजनीतिक सूत्र में बाँधने तथा देश को शान्तिमय वातावरण और सुव्यवस्थित शासन-व्यवस्था प्रदान करने का प्रयास किया। जिसके सम्बन्ध में चीनी और अरबी वृतान्तों में विवरण मिलता है। जयवर्मन तृतीय के कोई पुत्र न था और सिंहासनारूढ़ होने के अनियन्त्रित विधान के फलस्वरूप इन्द्रवर्मन नामक एक राजकीय वंशज ने 877 ई० में शासन का बागडोर अपने हाथों में ले ली। इन्द्रवर्मा जयवर्मन के वंश से दूर का सम्बन्धी था। राजनीतिक दृष्टिकोण से इस युग में अंकोर राज्य की स्थापना हुई, जिसने आगे चलकर एक विशाल साम्राज्य का रूप धारण किया।

वंशावली

इन्द्रवर्मा:— जयवर्मा तृतीय के मृत्यु के बाद इन्द्रवर्मा 877 ई० में इन्द्रवर्मा ने कम्बुज के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। इन्द्रवर्मा का पिता क्षत्रिय पृथ्वीवर्मन का पुत्र था और इनकी माता सम्राज्ञी रुद्रवर्मन की पुत्री थी। और नृपतीन्द्रवर्मन की दौहित्री थी। श्री रुद्रवर्मा की भानजी का विवाह राजा जयवर्मा द्वितीय के साथ हुआ था। इस प्रकार इन्द्रवर्मा का जयवर्मा तृतीय के साथ अपनी माता की ओर से सम्बन्ध भी था। इन्द्रवर्मा ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसका जयवर्मा तृतीय के साथ पारिवारिक सम्बन्ध था इसी निकट सम्बन्ध होने के कारण राजसिंहासन का अधिकार स्वीकार कर लिया था। इन्द्रवर्मा किसी षड्यन्त्र के द्वारा राज्य प्राप्त नहीं किया था। इन्द्रवर्मा द्वारा कम्बुज के राज्य की प्राप्ति में शिवसोम उसका प्रधान सहायक था। इन्द्रवर्मा शिवसोम का शिष्य था। अतः शिवसोम जैसे विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति का सहाय इन्द्रवर्मा द्वारा राज्यप्राप्ति में निश्चित ही उपयोगी होगा।

इन्द्रवर्मन के शासनकाल

877 से 889 ई० तक था। इन 12 वर्ष के शासन काल के विस्तृत जानकारी का अभाव है जो था

लेखों से ज्ञात होता है कि यह दूर देशों तक विजय प्राप्त की।

राज्यविस्तार → इन्द्रवर्मा उत्तर में कम्बुज का राज्य चीनी प्रान्त यूनान तक पहुँच चुका था। चीनी स्रोतों के अनुसार नन-चाओ राज्य के अन्तर्गत था जिसे थाई ग्रन्थों में मिथिला राष्ट्र कहा है। यूनान का उत्तरी भाग था। इन्द्रवर्मा अपना साम्राज्य दूर-दूर के देशों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। अतः इन्द्रवर्मा केवल विजेता ही नहीं बल्कि वास्तुशिल्प और कला का प्रेमी था। इन्द्रवर्मा द्वारा बनाये गए विभिन्न अनेक मंदिर का वर्णन अभिलेखों में मिलती है। उसने शिव और पार्वती का मूर्तियां स्वयं बनायी थी। अतः इन्द्रवर्मा कम्बुज में शिल्प और कला काफी प्रोत्साहन किया। मृत्यु के पश्चात् यह राजा 'ईश्वरलोक' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यशोवर्मन :— 889 ई० में इन्द्रवर्मा के मृत्यु के बाद उसके पुत्र यशोवर्मन सिंहासन पर बैठा। यशोवर्मन कम्बुज का सबसे विद्वान शासक था। समुद्रगुप्त की तरह यह अपनी शक्ति, वीरता तथा विद्वता का सर्वश्रेष्ठ परिचय दिया। उसके पिता इन्द्रवर्मा ने शिक्षा-दीक्षा के लिए शिवकैवल्य के भाई के पौत्र को नियुक्त किया था। यह राजा कवियों का आश्रयदाता था। अभिलेखों में उसके शासन काल की राजनीतिक घटनाओं की जानकारी का अभाव है परन्तु उससे यह आवश्यक जानकारी मिलती है कि यशोवर्मा राज्य विस्तार कहाँ-कहाँ तक था। एक अभिलेख के अनुसार इसके राज्य की सीमा चीन से समुद्र तक था। राजा राजेन्द्रवर्मा के अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोवर्मा का राज्य चीन और चम्पा तक फैला हुआ था। इस राजा का विशेष रूप से किसी ऐतिहासिक घटना का उल्लेख नहीं है। यशोवर्मन के लेखों के अध्ययन

से प्रतीत होता है कि वह धार्मिक और लौकिक साहित्य का प्रेमी था। उसने राज्यकाल के प्रथमवर्ष में ही साम्राज्य के विभिन्न भागों में बनवाये। यशोधर आश्रम भी प्रथम वर्ष में गणेश की उपासना के लिए बना। इसके विचार उच्च थे। स्वयं वह शैव होते हुए भी वैष्णव और बौद्ध धर्म का आदर करता था। इसके शासन काल में कला का काफी विकास किया। उन्होंने तड़ागों, मन्दिरों, आश्रमों इत्यादि का निर्माण करवाया और यशोधरपुर नामक नगर की स्थापना हुई जो कि 13वीं शताब्दी तक कायम रही। इसकी मृत्यु 900 ई० में हुई। मरने के बाद इसका नाम "परमशिवलोक" रखा गया।

यशोवर्मन के उत्तराधिकारी :→

प्रथम यशोवर्मन के उत्तराधिकारियों में उसके दो पुत्र हर्षवर्मन प्रथम और ईशानवर्मन द्वितीय थे। जो क्रमशः एक दूसरे के बाद गद्दी पर बैठे। इसके बाद कम्बुज देश का राजा जयवर्मा चतुर्थ बने। जयवर्मा चतुर्थ यशोवर्मा का बहनोई था। जयवर्मा चतुर्थ यशोवर्मा का बहनोई था।

जयवर्मा चतुर्थ :- जयवर्मन के लेखों से प्रतीत होता है कि इसने स्वतंत्र रूप से अपना राज्य उत्तर-पूर्व में स्थापित कर लिया था पर वैधानिक रूप से उसका सम्पूर्ण कम्बुज देश पर अधिकार नहीं हो सका। यशोवर्मा के पुत्रों के विरुद्ध विद्रोह कर शक्ति प्राप्त की थी और इसलिए यशोधरपुर के स्थान पर कोहकेर में अपनी नई राजधानी का निर्माण करवाया। यह स्थान अंकोरथोम के 50 मी० उत्तर पूर्व में है। उसका भग्नावशेष आज तक भी विद्यमान है। उस राजा द्वारा बनाये गए मन्दिरों तथा उनमें प्रतिष्ठापित मूर्तियों का वर्णन है। तथा अनेक लेख है। जयवर्मा चतुर्थ के शासनकाल में कम्बुज की सेनाओं द्वारा चम्पा पर आक्रमण किया गया। चम्पा की सेना इनमें [illegible]

संस्कृति और साहित्य ने कम्बुज देश में अपना पूर्ण स्थान बना लिया। लेखों से प्रतीत होता है कि यहाँ भारतीय संस्कृति साहित्य ने अपना स्थान बना लिया था और रचनाओं में सभी प्रकार के छन्द तथा अलंकारों का प्रयोग किया जाता था। सम्राट यशोवर्मन स्वयं बड़ा विद्वान था और उसने महाभाष्य पर व्याख्या लिखी थी। पाणिनी के सूत्रों का भी कई लेखों में उल्लेख मिलता है। मनुस्मृति के बहुत से श्लोक-उद्धरण लेखों में मिलता है। धर्म के क्षेत्र में ब्राह्मण वैष्णव तथा शैव और बौद्ध धर्म पूर्ण रूप से प्रचलित थे और विभिन्न आश्रम भी थे। भारत से आए हुए ब्राह्मणों का समाज और शासन में आदरणीय स्थान था तथा राजवंश के साथ उनका वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित होता था। राजेन्द्रवर्मन की पुत्री राजलक्ष्मी का विवाह मथुरा निवासी दिवाकरभट्ट नामक ब्राह्मण के साथ हुआ।

वास्तव में 1000 ई० तक कम्बुज देश ने राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में बड़ी प्रगति की जिसका श्रेय भारतीय सम्पर्क तथा भारतीय उपनिवेशों को है। यद्यपि समय-समय पर राज्याधिकार के लिए गृहयुद्ध हुआ पर वह थोड़े समय तक ही रहा और विस्तृत कम्बुज साम्राज्य लगभग तीन सौ वर्षों तक अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित रख सका।